राजनीति का अपराधीकरण

[CRIMINALISQATION OF POLITIFCS]

Name: Sheela Devi (Karnal)
Political Science

राजनीति मे आगे बढ़ने और सत्ता हथियाने के लिए अपराध का पगयोग ही राजनीति को अपराध प्रधान बनाकर राजनीतिक महत्वाकाक्षाओं की पूर्ति के लिए अपराध का सहारा लेना राजनीति का अंग बन जाता है। तो इसको राजनीति अपराधीकरण की सज्ञां दी जाती है। किसी न किसी तरह सत्ता तक पहुचने की आकाक्षां ही अपराध प्रधानता प्रयोग के लिए प्रेरित करती है। वर्तमान समय मे धूर्त,दुष्ट और बदमाश अधिकाधिक सख्या मे प्रवेश लेने का कारण यह है। कि राजनीति सबसे शीघ्र और सबसे अधिक लाभ पहुचाने वाला धंधा बन गया है। यह विचार चल रहा है कि आपराधिक ताक्र तरीको को अपनाने मे निपुण व्यक्ति के लिए अपराध और राजनीति को एक साथ आज राजनीति मे एक के बाद दूसरी सफलता प्राप्त करना सरल हो गया है।

भारत मे लगभग 1 करोड 80 लाख शिक्षित बेरोजगार और शिक्षित-अशिक्षित पूणै बेरोजगार और अर्द्व-बेरोजगार सब कुल मिलाकर तो यह संख्या 15 करोड के लगभग है ये पींडित व्यक्ति खुली आखो से देख रहे कि अपराधी तत्व फाइव स्टार होटलो,जहाजो, वातानुकूलित शयनयानो, हैल्थ कल्बो और ऐशोआराम के सभी साधन प्रयोग कर रहे है। अपराध के आधार पर जब इन्होने धन कमा लिया, तब समाज मे इन्हे सम्मान और भारी सम्मान प्राप्त हा गया है। ये तथ्य शिक्षित-अशिक्षित बेरोजगार, युवा वर्ग, विशेषयता शिक्षित बेरोजगारो को अपराध और कालान्तर मे राजनीति के अपाधीकरण की ओर धकेलते है। भारतीय राजनीति का अपराधीकरण उन राज्यो मे अधिक हुआ है जो आर्थिक दृष्टि से पिछड गये है त्था जहा पढे लिखे लोगो मे भारी बेरोजगाारी है।

सत्ता प्राप्ति राजनीतिक का एक मात्र लक्ष्य हो गया है। चख्नाव के समय उम्मीदवारो का चयन करते समय की शिक्षा, नैतिक चरित्र, दल के प्रति उसकी निष्ठा-कर्मठता, आदि की तुलना मे केवल उस बात को महत्व दिया जाता है। कि उसकी चुनाव जीतने की सम्भावनाएं कितनी हैं और उसे उम्मीदवार बनाने पर राजनीतिक दल को कितने लाभ और किस प्रकार के लाभ प्राप्त हो सकते है। जिन व्याक्यिो ने अपराध प्रवृतियो को अपनाकर बडी मात्रा मे धन अर्जित कर जिनको साधन देते है कुछ अन्य निर्वाचक क्षेत्रो मे बाहुबल के आधार पर पार्टी के पक्ष मे मत डलवाते है। तथा इन सब पर किसी प्रमुख दल का टिकट पाने मे सफल हो जाते है। जब राजनीति धन और बाहुमल का खेल बन चुकी है। विधायक और सांसद के आगे की सीढ़िया भी ये अपराधिक रिकार्ड वाले राजनीतिज्ञ अधिक शीघ्रता के साथ चयन का तथ्य यह है कि मात्र

विधायक और सांसद रहते हुए भी ये कंलकित राजनीतिज्ञ अन्य विधायको और सांसदो की तुलना कारे प्रभावित करने मे अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं।

मंत्री, विधायक और सांसद की बात तो कुछ राज्यो मे तो शासक दल के छुटभैया नेता प्रशासन और पुलिस के अधिकारियो पर दवाब डालने लगे है। कुछ प्रशासन के सर्वोच्च स्तर पर उासीन मुख्यमंत्री द्वारा उन्हे ऐसा करने से रोकने के स्थान पर प्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है।

चुनाव और सत्ता राजनीति लोकतांत्रिक व्यवस्था का अंग है। लेकिन चुनावो का अनवरत चक्र और आठों प्रहर की सत्ता राजनीतिक लोतांत्रिक व्यवस्था और प्रशासन आघात पहुचाते है। तथा अपराधियो को और कालान्तर मे राजनीति के अपराधीकरण को प्रोत्साहित करते है। प्रांरभ मे वे फर्जी मतदान मतदान केन्द्रो पर कब्जा, धमकी, मारपीट गुण्डागर्दी आदि के आधार पर उम्मीदवारो और राजनीतिक दलो को मदद देकर उनके 1967 से पहले तक सामान्यता पाँच वर्ष मे एक बार चुनाव होते थे, लेकिन 1967 से चुनाव का कोई कलैण्डर ही नही रही है, आये दिन चुनाव होते है और देश मे सदा ही चुनाव का वातावरण बना रहता है। आये दिन बहुत बडी संख्या मे अपराधियों को राजनीति मे प्रवेश दिया जाता है।

सत्ता राजनीतिक और सवंय राजनीतिज्ञ के अपराधीकरण के लिए प्रमुख रूप से दोषी है। राजनीतिक अपने शुद्र स्वार्थो के लिए अपराधी को सरंक्षण देते है, आश्रय देते है,और कठिन घडियो मे सभी प्रकार की सहायता देते हे। राजनीतिज्ञो से प्राकत्साहन पाकर ये अपराधी पहले बडे अपराधी बनते है। और फिर राजनीति मे प्रवेश करते हे। अपराधी को राजनीति मे लाने मे कोई एक राजनीतिज्ञ या कुछ राजनीतिज्ञ भूमिका अवश्यक ही निभाते है। विधानसभा हार जाने पर भी उन्हे 'जैड' श्रेणी की सुरक्ष मिलती है। यह भी देखा गया कि ये हिस्ट्रीशीटर अपने अंगरक्षको को भी अपराधिक कार्यो मे संलग्न कर लेते है। राजनीति के अपराधीकरण के सम्बन्ध मे नियुक्त की गई बोहरा यमिति का सरांश है- ''अपराधी गिरोह राजनीतिक संरक्षण मे फलफूल रहे है। राजनीतिज्ञो और अपराधियो पर गठबंधन एक समानान्तर सरकार चला रहा है, जिसने राज्य को अप्रंसागिक कर दिया है

इन अपराधिक रिकार्ड वाले व्याक्तियो के चुनाव मे विजय होने के कारण ये है- भारत की राजनीति मे, विशेषयता बिहार और उ.प्र. तथा अन्य कुछ राज्यो की राजनीति मे जाति ने एक तत्व, कई बार प्रमुख तत्व की भूमिका प्राप्त कर ली है। अपराधी लोगो की एक जाति होती है साधनो और बाहुमल के प्रभाव से वह अपनी जाति मे प्रभावी स्थिति रखता है कुछ प्रतिशत मत वह जाति के बल पर प्राप्त कर लेता हैफर्जी मतदान और मतदपन केन्द्रो पर कब्जा वह अन्य उम्मीदवारो की तुलना मे अधिक सफलता के साथ कर लेता है। मतदाता एसकी धमकी के प्रभाव और आंतक से परिचत होते है। अपराधिक राजनीतिज्ञ अपनी सारी बुराइयो के बावजुद अपने ही कार्यवश जनता के दुख दर्द मे साझीदार बनते है तथा इस बात का राजनीतिक

लाभ उन्हे मिलता है। ये अपराधिक राजनीतिज्ञ मे निर्वाचक क्षेत्र को और अपने समर्थको को कई लाभ पहुचाते है, लूटमार दूसरे क्षेत्रो मे करते है। ये सभी बाते आंशिक रूप से सत्य हैं। लेकिन इन सब बातो के बावजूद अपराधिक रिकार्ड वाले राजनीतिज्ञो की विजय के लिए जनता भी दोषी है। सामान्य धौंस-डपट और संकीर्ण हितो से ऊपर उठकर देश के व्यापक हित की वह बात नही सोचती या नही सोच पाती।

समाज और समस्त व्यवस्था मे अपराधो के बढने और अपराधियो की समस्त व्यवस्था मे सम्मानजनक स्थिति प्राप्त होने का एक बडा कारण है-शासन की क्षमता और गुणवता मे उत्तरोत्तर कमी आयी। इस देश मे अनेक क्षेत्रो मे तो अब कोई शासन रहा ही नही है। माफिया राज चल रहा है अपराधी वर्ग मे अब भ्रष्टाचार बल पकडता जा रहा है। कि छोंटा अपराध करने पर सजा होती है। बडे अपराध करने पर, सगठित रूप से करने नामी-गिरामी अपराधी बन जाने पर न केवल अधिकारी वर्ग वरन् समस्त शारसन को झुकाया जा सकता है। डेढ़ सौ से तो शासन ने अपराधियो और आंतकवादियो के सम्मुख खुले रूप से घुटने टेकने की नीति अपना रखी है।

1962 मे चीन के हाथो भारत की पराजय के बाद कांग्रेस ने महसूस किया के उसका जनाधार खिसक रहा है तथा अब उसके आत्मविश्वास मे भारी कमी आई। अब उसने अपराधीकरण, भ्रष्टाचार और जातिवाद जैसी बुराइयो से निबटने के स्थान पर इन बुराइयो के साथ हाथ मिला लेने की बात सोची। विपक्षी दल उत्तर भारत के राज्यो तथा प. बगांल जैसे राज्यो मे सत्ता पाने के लिए उतावले थे तथा आचार विहीनता प्रसंग मे वे कांग्रेस से पीछे नही है। 1967 तक आते-आते कुछ बडे और साधन सम्पत्र अपराधियो के मानस मे राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने जन्म ले लिया है। अब वे सोचने लगे कि उन्हे तो खुद चुनाव लडना चाहिए तथा वे खुद किसी प्रमुख राजनीति दल के उम्मीदवार बन सकते हैं। अधिकांश प्रदेशो मे विशेषयता उ.प्र. बिहार और प. बंगााल, आदि राज्यो मे कांग्रेसी और विपक्षी दल- दोनो सत्ता के लिए किसी को भी गले लगाने के लिए उतारू थे। ''जीत की सर्वाधिक सम्भावना वाले उम्मीदवर का चयन'' उनका सर्वोच्च आधार बन जाता है।

फर्जी मतदान मतदान केन्द्रो पर कब्जा, धमकी, मारपीट, गुण्डागर्दी, अब राजनीति का हिस्सा बन चुके है। चुनाव आयोग ने अपनी रिपोग्ट मे इन घटनाओ का उल्लेख नही किया, यद्यपि अनेक स्थानो पर पुर्नमतदान के आदेश दिये गये। विशेष रूप से उत्तर भारत के राज्यो मे राजनीतिक उठा पटक हुई- घोर अव्यवस्था, अकल्पनीय अनुशासनहीनता, रोज दल बदल, कुछ कमजोर व्याक्तियो का मुख्यमंत्री बनना,मंत्री पद पर आसीन व्याक्तियो के गिरते हुए स्तर, आदि से जुडी हुई जो घटनाए हुई। उसने शेष बची सभी राजनीतिक मान-मर्यादाओ को झटके मे समाप्त कर दिया। अपराधी तत्वो ने यह भी सोचा कि ' राजनीति तो सबसे अधिक लाभ का धन्धा और निरापद धन्धा ' बन सकती है।

1980 तीा 84 के लोकसभा चुनाव भी किसी न किसी रूप मे मुदा आधारित चुनाव थे इसलिए स्थिति ने और अधिक विकृति प्राप्त नही की, लेकिन 1989 से लेकर 2000 ई. तक राजनीतिक अपराधीकरण की दिशा मे इतनी अधिक तेजी से आगे बढा है कि अन्तिम दशक के अन्त तक स्थिति शोचनीय हो गई है। 1989 मे देश जो चुनाव हुए, उस दौरान अपराधी तत्व और माफियादारो का जैसा प्रयोग राजनीतिज्ञो द्वारा चुनाव प्रकिया मे किया गया यह लोकतन्त्र की शर्मनाक स्थिति थी। न केवल साधारण निर्वाचन क्षेत्रो वरन् अति राजनीतिज्ञो के निर्वाचन क्षेत्रो मे भी माफिया त्तवो सहारा लिया गया तथा मतदान केन्द्रो को प्रभावित करने के लिए हर सम्भव हथकण्डा अपनाया गया।

जब अपराधी विधायक बनते है, तो सदन मे मारपीट की स्थितिया हो सकती है।फ जब उ.प्र. मे मुलायम सिंह यादव बसपा के सहयोग से दुबारा मुख्यमंत्री बने थे, तब विधायक के पहले ही दिन सदन मे न केवल हगांमा और मारपीट की गई,वरन् ऐसी रत्करंजित मारपीट की गई, जिसकी कमसाल नही मिलती। यह गुण्डागर्दी, अजारकता और राजनीतिक अपराधीरिण की पराकाष्टा का सकेंत है। अब मिसाल भी बनने लगे। मुलायम सिंह यादव के पतन के बाद मुख्यमंत्री पद पर आसीन मायावती ने दीनानाथ भास्कर नाम के आदमी को अपने मंत्रिमण्डल मे लिया, जिसपर तीन पुलिसकर्मियो सहित सात व्याक्तियो की हत्या मे शामिल होने कारण भास्कर को मंत्रिमण्डल से हटाया गया।

अपराधिक छवि वाले विधायको के मामले मे राज्य की 15वीं विधानसभा का स्वरूप भी 14 वी विधानसभा अलग नही है। इस बार भी रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया, मुख्तार अंसारी, अखिलेश सिंह, अमरमणि सिंह, डी.पी.यादव और मदन भैया जेसे नेता विधायक चुन लिए गये।

Name: Sheela Devi, Add. H.No. 1193, Sec-9, Karnal - 132001